

# तकनीक विकसित कर अपशिष्ट से उद्योग पायें मूल्यवर्धित पदार्थ

□ एनएसआई की आनलाइन सेमिनार, 200 प्रतिभागी शामिल हुए

कानपुर, 19 जनवरी। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में अन्य वैकल्पिक प्रौद्योगिकी की मदद से शीरा आधारित डिस्टलरियों में जेडएलडी नियंत्रण एवं अन्य मूल्यवर्धित उत्पाद की प्राप्ति विषय पर एक आनलाइन सेमिनार का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में जेएलडी के लिए केन्द्रीय प्रदूषण नियंत्रण



सेमिनार में शामिल निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन।

अनुरूप प्रदूषण नियंत्रण के अलावा इस जेएलडी उत्पाद की प्राप्ति पर विचार करते हुए अपशिष्ट को संसाधन में बदलने के तकनीक पर जानकारी प्रदान की। संस्थान के निदेशक प्रो. नरेन्द्र मोहन ने शर्करा उद्योग से जुड़ी डिस्टलरी इकाइयों का आह्वान करते हुए कहा कि उद्योग को संस्थान के साथ मिलकर ऐसी तकनीकों का विकास करना चाहिये जिसे शून्य उत्प्रवाह के लक्ष्य को प्राप्त करते हुए अपशिष्ट पदार्थों से मूल्यवर्धित पदार्थ को प्राप्त किया जा सके। उन्होंने कहा कि शीरा आधारित उत्प्रवाह जिसे स्पेंट-वाश के नाम से जाना जाता

है। इसके द्वारा कई मूल्यवर्धित पदार्थ तैयार किये जा सकते हैं। क्योंकि यह पोटाश, मैग्नेशियम सल्फेट और स्वच्छ जल का भी स्रोत होता है। हमें केवल जैव-उर्वरक तैयार करने या जलाकर द्वारा शून्य उत्प्रवाह के लक्ष्य को प्राप्त करने के अलावा भी इसके उपयोगों के विषय में सोचना चाहिये। स्पेंट वाश को

सुखाकर पोटाश से समृद्ध तैयार किया जा सकता है और हम ऐसी भी तकनीक विकसित कर सकते हैं। इस अवसर पर मेमर्स राज प्रोसेस इक्यूमेंट एंड सिस्टम प्रा. लि., पुणे के द्वारा नवीन स्पे-आधारित स्पेंट वाश को सुखाने की तकनीक का प्रदर्शन किया। जिससे बायलर से निकलने वाली वेस्ट गैसों का स्पेंट वाश को सुखाने में प्रयोग किया जाता है जिसका उपयोग उर्वरक और इंधन के रूप में किया जा सकता है। कार्यक्रम में शर्करा उद्योग से जुड़े 200 से अधिक प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस दौरान समन्वयक अनूप कुमार कनौजिया ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

## डिस्टलरियों के उत्प्रवाह से बन सकती हैं पोटाश व ईटें



राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के वेबिनार में मौजूद वक्ता।

फोटो : एसाएनबी

कानपुर (एसएनबी)। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में मंगलवार को शीरा आधारित डिस्टलरियों में 'शून्य' उत्प्रवाह के साथ अपशिष्ट पदार्थों से मूल्यवर्धित पदार्थों को प्राप्त किये जाने पर मंथन किया गया। विशेषज्ञों ने कहा कि डिस्टलरियों के अपशिष्ट पदार्थों से कीमती पोटाश बनाने के साथ ही ईट भी बनाई जा सकती हैं। शर्करा संस्थान निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन ने कहा कि इसके लिए जरूरी तकनीक के विकास पर कार्य करने की जरूरत होगी।

'अन्य वैकल्पिक प्रौद्योगिकियों की मदद से शीरा आधारित डिस्टलरियों में जेएलडी नियंत्रण एवं अन्य मूल्यवर्धित उत्पाद की प्राप्ति' विषयक वेबिनार के अवसर पर कई सहयोगी तकनीक का प्रदर्शन भी किया गया। मेमर्स राज प्रोसेस इक्यूमेंट एंड सिस्टम प्रा.लि., पुणे द्वारा नवीन स्पे आधारित स्पेंट वाश को सुखाने की तकनीक का प्रदर्शन किया

गया। इसमें बायलर से निकलने वाले वेस्ट गैसों का स्पेंट वाश को सुखाने में उपयोग किया जाता है। मेमर्स सीएसएमसीआरई एंड केम प्रोसेस प्रा.लि, अहमदाबाद द्वारा 'एफसीओ मानक के अनुसार पोटाश, पशु आहार एवं स्वच्छ जल को स्पेंट वाश से प्राप्त कर जेएलडी लक्ष्य को पाने का तकनीक प्रदर्शित किया गया।

अनूप कुमार कनौजिया के समन्वयन में आयोजित वेबिनार में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान के निदेशक प्रो.नरेन्द्र मोहन ने कहा कि पारंपरिक तकनीक की मदद से जैव उर्वरक तैयार करने व इनसीनरेशन द्वारा शून्य उत्प्रवाह के लक्ष्य को प्राप्त करने की एक सीमा है।

अब ऐसे स्वदेशी तकनीकों को विकसित करने की जरूरत है, जो डिस्टलरियों को पर्यावरण संतुलन लक्ष्य को पाने में मदद करने के साथ ही आर्थिक लाभ भी कराये। बायलर से प्राप्त राख से पोटाश प्राप्त करने के अलावा बचे हुए अपशिष्ट से ईट निर्माण की काफी संभावनाएं हैं। पोटाश निर्माण से इसके आयात में कमी लाकर विदेशी मुद्रा को बचत भी की जा सकती है।

राष्ट्रीय शर्करा संस्थान ने अपशिष्ट पदार्थों से मूल्यवर्धित पदार्थों के निर्माण पर किया मंथन निदेशक ने जरूरी तकनीक के साथ विकास पर दिया बल

जबरदस्त मरदाना ताकत के लिये  
इजायें मरीजी पर आजमाया हुआ  
**एस.एस.**  
तेल व पाऊंडर  
सैक्स टाइम बढ़ायें  
मर्द एक्स्ट्रा टाइम वर्टी  
हमें कृपया कॉल कर लें 9219632232  
9050205100

# NSI discusses alternative ZLD technologies

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

National Sugar Institute Director Prof Narendra Mohan, while addressing a webinar on 'Alternative technologies for achieving zero level discharge' at the institute called upon the industry to work jointly with institutes to develop technologies which apart from ensuring zero liquid discharge may result in obtaining some value-added products.

He said the effluents, known as spent wash in molasses based distilleries, could be potential source for obtaining many value-added products like potash, magnesium sulphate and good quality water.

Prof Mohan said the NSI had to look beyond the existing technologies of bio-composting and incineration to achieve zero liquid discharge and the spent wash could be dry sprayed to get potash rich

powder or may adopt other feasible technologies for recovering potash from spent wash.

The NSI director said India relied on imports to fulfil its entire consumption of potash, bringing in more than 4 million tonnes every year, and thus recovery of potash from distillery spent wash could go a long way in meeting the country's requirements and saving foreign exchange. He said this step could make the country self-dependent and self-reliant in the future.

Around 200 delegates from the sugar industry participated in the webinar.

Innovative technologies were also discussed which besides ensuring zero liquid discharge to meet the Central Pollution Control Board norms, may yield value-added products, thus converting waste to resource.

During the webinar, a presentation on a novel spray drying system using waste gases

from boiler for heating purposes was given by Raj Process Equipment and Systems Pvt Ltd, Pune, to get potash rich powder which has multiple applications as fertiliser and fuel.

The second presentation was on 'Recovery of FCO grade potash, animal feed and pure water from spent wash to achieve ZLD'. It was given by CSMCRI & Chem Process P Ltd., Ahmedabad.

As the conventional technologies of bio-composting and incineration have limitations, the NSI has been looking for indigenous technologies which can increase the revenue base of the distilleries besides ensuring necessary environmental compliance with respect to ZLD. They also detailed a technology for converting ash from incineration boiler for recovering potash and utilising the residual ash for brick making. The vote of thanks was proposed by Anup Kumar

Kanaujia.

**SYMPOSIUM:** Inspector General of Police Mohit Agarwal, while speaking in a symposium on women's safety and social responsibility organised at Kanpur Vidya Mandir Mahila Mahavidyalaya auditorium on Tuesday, said there was need to make girl students aware of their self-respect.

Expressing concern, he said the rising crime incidents against women also needed to be checked by initiating stern penal action against the guilty.

Speaking as chief guest at the event, Agarwal said women required to be promoted by inculcating the traditional and ethical values through education in them.

He stressed on enhancing the awareness of girl students.

Earlier, the organisers felicitated the guests, including IG Mohit Agarwal, Superintendent of Police (West) Anil Kumar and noted obstetrician Dr Kiran Pandey.